प्राक्कथन

✷ प्रेरणा एवं विषय चयन

बी. ए. के पाठ्यक्रम के दौरान 'हरिशंकर परसाई' की कहानियां पढ़ने क मौका मिला इससे कहानी-विधा में रुचि बढ़ी। उसी दौरान मुझे प्रेमचंद, यशपाल जैसे श्रेष्ठ कहानीकारों की भी कहानियां पढ़ने का मौका मिला। एम्. फिल के लघु शोध-प्रबंध के विषय चयन के वक्त मन्नू भंडारी, महीपसिंह, भीष्म सहानी, उषा प्रियवंदा, विवेकी राय, मालती जोशी आदि कहानीकारों की कहानियां पढ़ी। मालती जोशी का 'एक सार्थक दिन' कहानी-संग्रह पढ़ने पर, मालूम हुआ कि आलोच्य संग्रह की लगभग सभी कहानियां 'परिवार' से संबंधीत दिखाई है। उनकी कहानियां पारिवारिक समस्याओं तथा परस्थितियों को प्रमुख मानकर लिखी गई हैं। वर्तमान पारिवारिक जीवन अनेक जटिल समस्याओं से घिरा हुआ है, इन समस्याओं का यथार्थ चित्रण इनकी कहानियों में हुआ है जिसने मुझे बहुत प्रभावित किया। श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. आर. जी. देसाई जी से इस संदर्भ में निरंतर चर्चा के बाद 'मालती जोशी की कहानियों में पारिवारिक जीवन' को अपने लघु शोध-प्रबंध के विषय के रूप में चुना। उन्होने प्रस्तुत विषय पर अनुसंधान करने के लिए सहर्ष अनुमती और प्रोत्साहन दिया।

✷ विषय का महत्त्व एवं उददेश्य

कहानी के उद्भाव से मध्यकाल तक पुरुष कहानीकारों की ही संख्या काफी रही तथा महिला कहानीकारों की संख्या अपेक्षा में कम रही है। परंतु साठोत्तरी काल में अधिक संख्या में महिलाएं इस क्षेत्र में लेखन करने लगी। इन लेखिकाओं का ध्यान मुख्यतः पारिवारिक क्षेत्र की ओर अधिक आकृष्ट हुआ। वर्तमान युग की चुनौतियों को स्वीकार करनेवाली इन महिलाओं का पारिवारिक जीवन संबंधी दृष्टिकोन प्रचुर मात्रा में परिवर्तित हुआ। इन साठोत्तरी महिला लेखिकाओं में मालती जोशी का अपना एक अलग स्थान है। इन्होने यथार्थ जीवन के संघर्षों का सामना साहस के साथ करते हुए मनुष्य जीवन के सभी पहलुओं को विश्लेषित करने का प्रयास किया है। विशेषतः नारी होने के कारण परिवार से इनका घनिष्ठ संबंध रहा है। जिसके कारण परिवार के हर पहलू पर सूक्ष्मता से प्रकाश डालने में इनकी मदद करता है। मालती जोशी ने आज के संघर्षात्मक युग में फंसी सामाजिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण परिवार संस्था का,

पारिवारिक संबंधों का तथा पारिवारिक समस्याओं के कारणों का चित्रण किस प्रकार किया है ? इसका विवेचन प्रस्तुत शोध-प्रबंध में किया है। इस शोध कार्य के लिए मालती जोशी के निम्नांकित कहानी संग्रह को आधार बनाया है - बोल री कठपुतली (1998), आखिरी शर्त (1997), मोरी रंग दी चुनरियां (1984), एक सार्थक दिन (1995), अंतिम संक्षेप (1996) इन सबका अध्ययन करके निष्कर्ष प्रतिपादित करना मेरे इस शोध-प्रबंध का उद्देश्य रहा है।

✷ प्रस्तुत विषय के अध्ययन के पूर्व मेरे मन में निम्नांकित प्रश्न उपस्थित हुए -

1. मालती जोशी का व्यक्तित्व किस प्रकार होगा ?
2. मालती जोशी के व्यक्तित्व ने उनके साहित्य को कहां तक प्रभावित किया है ?
3. मालती जोशी की कहानियों में परिवार का चित्रण किस प्रकार हुआ है ?
4. मालती जोशी की कहानियों में पारिवारिक संबंधों का चित्रण किस प्रकार हुआ है ?
5. मालती जोशी की पारिवारिक कहानियों में नारी का स्थान क्या है ?
6. मालती जोशी की कहानियों का परिवार किस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है ?
7. मालती जोशी की कहानियों का पारिवारिक जीवन किन समस्याओं से ग्रस्त है ?

अध्ययन की सुविधा के लिए प्रस्तुत विषय को निम्न अध्यायों में विभाजित किया है -

✷ अध्याय विभाजन

✷ प्रथम अध्याय - मालती जोशी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रस्तुत अध्याय में मालती जोशी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला है। उनकी 'जीवन रेखा में' जन्म एवं जन्मस्थान, माता-पिता, भाई-बहन, बचपन, शिक्षा, विवाह, संतान, लेखन-संस्कार, नौकरी आदि का परिचय दिया है। साथ ही उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है। उनके कृतित्व की पहचान में उनके साहित्य के सृजनारंभ को स्पष्ट करने के बाद मालती जोशी के 'रचना संसार' में कहानी, उपन्यास, बाल-साहित्य, अन्य-साहित्य, अनुवाद, रेडियो, टेलिविजन इन विधाओं की सूची उनके रचना संस्कार की तालिका के आधार पर दी है। मालती जोशी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के साथ उन्हें अब तक प्राप्त सम्मान एवं पुरस्कारों का भी उल्लेख किया है। प्रस्तुत अध्याय का समग्र निष्कर्ष अंत में दिया है।

✶ द्वितीय अध्याय - मालती जोशी की कहानियों का कथ्य

प्रस्तुत अध्याय में कथ्य शब्द का उद्भव और अर्थ स्पष्ट किया है। साथ ही विभिन्न कोशकारों के द्वारा दिए कथ्य के अर्थ को भी प्रस्तुत किया है। उसके बाद कथ्य की परिभाषा को स्पष्ट कर कथ्य के कहानियों में महत्त्व को भी स्पष्ट किया है। मालती जोशी खुद एक घरेलू औरत होने के कारण उनके कथ्य का विषय परिवार ही रहा है। जीवन की छोटी-मोटी अनुभूतियों को उन्होने अपनी लेखन के द्वारा व्यक्त किया है। उनकी कहानियों में टूटते परिवार, परंपराओं का खंडन, बिगड़ते पारिवारिक संबंध, अर्थ विवशता से घिरे परिवार, वेतनभोगी महिलओं की पीड़ा, प्रेम के कारण बदलती मानसिकता, बिखरता प्रेम, आधुनिकता के नाम पर नारियों का शोषण, बदलते संदर्भ आदि का चित्रण किया है और अंत में निष्कर्ष दिया है।

✶ तृतीय अध्याय - परिवार का सैद्धांतिक विवेचन और विवेच्य कहानियों में परिवार का स्वरूप

इस अध्याय में 'परिवार' को स्पष्ट करने के लिए उसका कोशगत अर्थ, परिभाषा, स्वरूप एवं प्रयजनों का विवेचन किया है। तत्पश्चात् परिवार की परिभाषाएं एवं विशेषताएं देकर उसके कार्य को स्पष्ट किया है। मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्तियों और प्राथमिक अवस्थाओं ने परिवार को जन्म दिया परंतु परिवार का प्रयोजन केवल कामेच्छा की पूर्ति या भौतिक अवश्यकताओं की पूर्ति न होकर संतानोत्पत्ति करके सृष्टिक्रम को बनाए रखना इसका प्रमुख उद्देश्य रहा है। मालती जोशी की कहानियों के स्वरूप में सफल-असफल संयुक्त परिवार, सफल-असफल दांपत्य जीवन, दांपत्येत्तर संबंधों में पिता-पुत्र, पिता-पुत्री, माता-पुत्र, सौतेली मां-बेटा, माता-पुत्री, बहन-बहन, भाई-बहन, सास-बहू, भाभी-ननंद, देवर-भाभी, और मौसी-भतीजी इन संबंधों के कटु तथा मधुर संबंधों का विवेचन किया है। वर्तमान युग में पारिवारिक संबंधों में पहले जैसा स्थायित्व दिखाई नहीं देता। इन संबंधों में निश्चित ही परिवर्तन आया है इस विवेचन से प्राप्त निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

✶ चतुर्थ अध्याय - मालती जोशी की कहानियों में चित्रित पारिवारिक समस्याएं

इस अध्याय में समस्या शब्द की उत्पत्ति के बाद समस्या के कोशगत अर्थ को स्पष्ट किया है। पारिवरिक समस्या की परिभाषा को भी स्पष्ट किया है। पारिवारिक समस्याओं में पारिवारिक विघटन की समस्या, असफल विवाह, अनचाहा विवाह, बूढ़ापे की समस्या, बदलते रिश्तें की समस्या, अर्थाभाव, तलाक, अकेलापन एवं घुटन, असफल प्रेम, बेरोजगारी, रूढ़ियों का समर्थन, आत्महत्या अविवाहित नारी

और विधवा नारी की समस्या, इन समस्याओं का विवेचन किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष को स्पष्ट किया है।

✷ **समग्र मूल्यांकन**

प्रस्तुत विषय के अध्ययन के उपरांत प्राप्त निष्कर्षों को समग्र मूल्यांकन के अंतर्गत दर्ज किया है।

✷ **परिशिष्ट**

✷ **संदर्भ ग्रंथ सूची**

अ. आधार ग्रंथ

आ. समीक्षा ग्रंथ

पत्र-पत्रिकाएं